प्यासे नगमे

(काव्य-संग्रह)

ISBN : 978-93-88102-54-4

अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) 481331
शाखा- एस-207, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) 852001
दूरभाष- (कार्या.)—7633-251359 (मो) 9424765259
अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण 2018 - नरेन्द्रपाल जैन
मूल्य - 150.00 रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

PYASE NAGAME *by Narendrapal Jain*

प्यासे नगमे

(काव्य-संग्रह)

लेखक

नरेन्द्रपाल जैन

प्रकाशक

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

भूमिका

मेरी दृष्टि में साहित्य सृजन ईश्वरीय देन और गुरु कृपा से ही संभव है। यद्यपि मैने किसी एक को गुरु नहीं माना, अपितु जिनसे भी जो भी सीखने मिला, वे मेरे लिये गुरु की भूमिका में रहे। कलम साधना और साहित्य सृजन माँ सरस्वती की कृपा के अंग हैं और मैं एक बालक की अज्ञानतापूर्वक विनती मात्र हूँ।

काव्य की विधायें दो तरह की देखी गयी। एक तो नहर की तरह जो सिर्फ अपनी सीमा में बहती हैं तथा एक नदी की तरह झूम कर बहती है। मैंने दोनों ही तरह के सृजन का प्रयास किया है, कुछ नियमों की सीमाओं में और कुछ उन्मुक्त मन के उद्गारों के रूप में किया है।

इस पुस्तक में प्रस्तुत रचनाओं के सृजन का उद्देश्य स्वरंजन, लोकरंजन के साथ देश और समाज में विकारों को व्यंग्य द्वारा दूर करना है, रिश्तों को निभाने और समझने के पहलुओं को उजागर करने का प्रयास किया है।

मुझे आशा है कि पाठकगण का आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन स्वरूप प्रतिक्रियाएँ प्राप्त होंगी। आदरणीय डॉ. प्रीति सुराना जी के प्रति आभार व्यक्त करते हुये प्रस्तुत पुस्तक माता-पिता को समर्पित करता हूँ।

—नरेन्द्रपाल जैन

अनुक्रम

भूमिका 5
1. प्यासे नगमे 11
2. बदलता वक्त 12
3. समय की चाल 13
4. स्वीकार मुझे वनवास प्रिये 15
5. माँ-बेटी का मन से संवाद 16
6. जिन्दगी 18
7. रे कबीर! मन है अधीर। 19
8. शब्दों की साधना 21
9. कहाँ गये वे आँगन 22
10. फिर क्या करोगे ? 23
11. माँ-बाप हैं किताबें 24
12. गाँधी जी 25
13. माँ 27
14. बचपन 29
15. सैनिक और सरहद 30
16. तुम याद आये...। 32
17. मैं नवदीप सजाऊँगा 33
18. उजियाले दीप कहाँ चले ? 35
19. पापा की बेटी 36
20. माँ शारदा से विनती 38
21. मनुहार 39
22. हाथों की रेखायें 40
23. बदला भाग्य 41

24. मन्नत 42
25. निगाहें 44
26. कभी नही हो सकता 45
27. हादसों का शहर 46
28. मैं खड़ा ही रहा 47
29. गीत रसीले लिख डाले 48
30. चलो हम गीत को ढूँढें 49
31. रातभर 50
32. अंदाज 51
33. दुआ 52
34. आजकल 53
35. बदले-बदले 54
36. दौलत 55
37. अतीत 56
38. बेटियाँ 57
39. इक पल 58
40. किस्मत 59
41. सहर 60
42. चिट्ठियाँ 61
43. क्या लिखूँ 62
44. एक प्रेम गज़ल 63
45. दस्तूर 64
46. आह लिखूँ 65
47. इत्र 66
48. मन की पीड़ा 67
49. दीप जलाना सीख लो 68
50. बातें नहीं आती 69
51. वक्त 70
52. समर्पण 71
53. दिल्लगी 72
54. जंग 73
55. सरगम 74
56. चादर 75
57. बंधन 76
58. हिस्सेदार 77
59. समय के छाले 78
60. अखबार 79
61. देख लिया 80
62. तिजोरी 81
63. शहादत 82
64. झूठी माया 83
65. खुद्दारी 84
66. दवा 85
67. विथियां 86
68. तस्वीर 87
69. आदमी 88
70. भाव 89
71. अभिलाषाएँ 90
72. दरार 91
73. ओ रे बादल 92
74. आँगन 93
75. सवाल 94
76. यादों की बस्ती 95
77. रगों में गाँव 96

1

प्यासे नगमे

शब्द बेघर हो रहे हैं, पंक्ति-पंक्ति उदास है,
आज रिश्तों की कविता को प्रणय की प्यास है।

दिल के कागज पर मेरे हर पल कलम चलती रही,
और समय की स्याही भी मनभावों में ढलती रही।
भावनाओं के है तिनके जोड़कर डोरी बनी,
उम्मीदों की छलनी में भी बूँद बनकर है छनी।

प्रेस की डोरी का अंतिम छोर मेरे पास है,
खींचकर ले आऊँगा फिर ये मुझे विश्वास है।

मैं हृदय की मिट्टी में हर शब्द बोता जाऊँगा,
उगने लग जाएँ कविता मुट्ठी-मुट्ठी भर-भर लाऊँगा।
यादों के काँटे मेरा जब उलझाएँ दामन कभी,
मैं पुकारूंगा तुम्हें बन के हवा आना तभी।

ग्रन्थ कोई बन ही जायेगा मुझे ये आस है,
पतझड़ों के मौसमों में भी रहे मधुमास है।

जब विरह की धूप में यादों के बादल छाएँगे,
आँसूओं बूँदों से अधरों की प्यास बुझाएँगे।
जब कभी-भी प्रीत की सरगम मैं तुमसे पाऊँगा,
कण्ठ तक डूबे हुये कुछ गीत-नगमें गाऊँगा।

संग बीते थे कभी वो एक-एक पल खास है,
आओगे तुम लौटकर फिर ये मुझे आभास है।

2

बदलता वक्त

इस तरह वक्त खुद में उलझता रहा,
चाँद ठहरा रहा रात ढलती रही।

कुछ सितारों की आयु जब पूरी हुई,
टूटकर गिरने की रस्म देखी यहाँ,
लोग मिन्नत लिये सब खड़े ही रहे,
आसमाँ की थी चुनर उजड़ी जहाँ।

रोशनी की चकाचौंध में था शहर,
बस्तियाँ कुछ अँधेरों में जलती रही।

रास्तों के भी पत्थर हैं जख्मी हुये,
एक ठोकर समय की जो उनको लगी,
काँटे भी देखे दर्दों में रोते हुये,
जब पथिकों के तलवों की नींदे जगी।

कुछ मकां दूध से हैं नहाते रहे,
कुछ छतें चाँदनी को तरसती रही।
घर के कोने ही खुद को लगे ढूँढने,
आँख खोई-सी मुझसे यहाँ अब रही,
जो जमाने को देता था मंजित कभी,
अब स्वयं को दिशा मिल न पायी सही।

रोशनी का भरोसा था जिस पर हमें,
वो शमा अपनी तारीख बदलती रही।

3

समय की चाल

आईने में नज़र बस मचलती रही,
हम संवरते रहे उम्र ढलती रही।
यूँ तो मदहोशी की रोशनी में रहे,
और शमा ज़िन्दगी की पिघलती रही।

क्या भला क्या बुरा हमने देखा किया,
इन हिसाबों में ही हम उलझते रहे।
मौत आने लगी जैसे कुछ दूरी पर,
मन के भावों में हम भी सिमटते रहे।
किसको दी वेदना किसने दी वेदना,
यादें आँसू में ढलकर वे बहती रही।

कितने मौसम बहारों के देखे मगर,
कितने पतझड़ भी हमने सहे हैं यहाँ।
कुछ बातों को महने दफन है किया,
कुछ दिल के कथन भी कहे हैं यहाँ।
कुछ दिया कुछ लिया बंद व्यापार हुआ,
चन्द साँसें भी अपनी बदलती रही।

चार दिन चार लोगों में रहकर पले,
चार लोगों के कांधों पर सोकर चलें।
धर्म के चार शब्द सुने न यहाँ,
चार गतियों के दुःख ही लगायें गले।

चर पल के लिए मैं ठहर-सा गया,
देह अंतिम चिता में सुलगती रही।

आईने में नज़र बस मचलती रही,
हम संवरते रहे उम्र ढलती रही।
यूँ तो मदहोशी की रोशनी में रहे,
और शमा ज़िन्दगी की पिघलती रही।

4

स्वीकार मुझे वनवास प्रिये

मेरे जीवन का उपवन
तुमसे है सुवास प्रिये,
तुम बिन पतझड़-सा लगे
मुझको तो मधुमास प्रिये।

तुम चन्दन वन की शीतलता,
प्रेम विषधर पाश लिए,
वचन तुम्हारे प्रेमग्रन्थ के,
सुंदर-से अनुप्रास लिए।
तुम बन जाओ वनदेवी तो,
स्वीकार मुझे वनवास प्रिये।

हर जतन पोन का तुम्हें
मेरी प्रेम तपस्या है,
मुख आभा से प्रकाशित
उजली अमावस्या है।
तुम प्रेम जोगनिया बन जाओ
तो मैं भी लूँ सन्यास प्रिये,

जग मन्दिर घण्टी नाद सुने
मैं तुम पायल की छनछन,
राधे-श्याम की हो अनुभूति
प्राण वायु धड़कन होकर
मेरी बन जाओ सांस प्रिये।

5

माँ-बेटी का मन से संवाद

ओ माँ क्या तुमसे लड़ाई हुई,
क्यों आज इतनी पराई हुई।
खुशियों भरा घर ये मेरा भी था,
क्यों आज इससे विदाई हुई।

मेरा वो झूला वो मेरे खिलौने
वो पापा की बाहों में सपने सलौने,
तुम्हारी ही गोदी में लोरी वो प्यारी
वो मीठी-सी नींदों के कोमल बिछौने
मैं तेरे तन का टूकड़ा हूँ माँ
या हूं मैं कोरी बनायी हुई,

घर को हैं मैने कितना संवारा
बचपन की यादों का है सहारा
कभी तुमने अपना गुस्सा छुपाकर
बस प्यार से है मुझको निहारा।

अब मैं क्या कोई किस्सा बनी
या हूँ कहानी भुलायी हुई,
आँखें चुराकर क्यों तुम हो रहती,
मन की वो बातें क्यों ना हो कहती,
नींदें भी मुझसे रूठी हुई हैं,
रातों में मुझको नहीं सोने देती।

ममताभरी आज मुझको सुना दो
फिर से वो लोरी सुनाई हुई,

वो भैया से मेरा लड़ना झगड़ना,
गलती मेरी पर मुझे कुछ न कहना,
बिना माँगे मुझको दिया तुमने हरदम
मेरी जिद को भी तुम्हारा यूं सहना।
दिल में तुम्हारे बातें बहुत हैं,
होंठों पर क्यों ये सिलाई हुई।

6

जिन्दगी

ए जिन्दगी तू छोटी है और लम्बा है ये रास्ता,
दूर कितनी तेरी मंजिल, मैं नहीं ये जानता ।

इस पहेली का कोई हल, ढूँढता किसी ओर में,
छोटी-छोटी उलझनें हैं, तेरी कच्ची डोर में,
उलझने सुलझाने में, कब डोर टूटे क्या पता ?

चौराहे पर आ खड़ा हूँ, चलते-चलते भूल में,
पग-पग डग मैं भरता जाऊँ, काँटों में कभी फूल में।
कोई सुख की कोई दुःख की, तकदीरें पहचानता।

पल-पल तेरा बीता जाये, रहता हूँ मदहोश में,
क्यों बनता है दुःख का कारण, आ रे अब तु होश में।
कितना भी समझाऊँ इसको, मन नहीं ये मानता।

आते-जाते दिन है रखती, अपने में तु जोड़ के,
कितना प्यार तुझे करते हैं, लोग रिश्ते तोड़ के।
न किसी से मोह तेरा, न किसी से वास्ता।

ए जिन्दगी...।

7

रे कबीर! मन है अधीर।

रोजे, अजाने और नमाज़ें
मन्त्र, चालीसा, आरती
होड़ चली है इनमें देखो
संवेदनायें मारती।
चले विषैले तीर,
रे कबीर! मन अधीर।

पत्थर की चोटों को जग में
काँटों से सहलाते हैं,
पापनाशिनी गंगा से अब
वे हाला नहलाते हैं।
धर्म दिया है चीर।
रे कबीर! मन है अधीर

कोयले का हो रहा है
दूध से अभिषेक,
तन उजाला कर पाया है,
लाखों में कोई एक?
काली हुई है खीर।
रे कबीर! मन है अधीर।

कदमों को छूकर भी ठोकर
सहनशील है बनी हुई,
आँखों ने पानी रोका है

मन की बदली घनी हुई।
गूंगी हो गयी पीर।
रे कबीर! मन है अधीर।

छल से अमृत पाकर वे
राहु-केतु बन बैठे,
मानव ने मानवता खोई
कर साँपों का फन बैठे।
पिटते रहे लकीर।
रे कबीर! मन है अधीर।

माया का चोला है फेंके
लक्ष्मीदास वहाँ पर,
खुदा शिवाला स्वर्ण धराये
खुद को तोले जहाँ पर।
तू क्यों बना फकीर।
र रे कबीर! मन है अधीर।

8
शब्दों की साधना

शब्द है पूजा शब्द साधना और कलम अभियंत्र है,
शारदा माँ जब हिय बसे तो एक-एक अक्षर मंत्र है।

मन उद्गम है कल्पनाओं का जिव्हा उसकी है धारा,
कण्ठ ध्वनि है सुरपदों की कागज दर्पण हे सारा।
देवलोक भी करे याचना मात तुम्हारी वाणी की,
तेरी अनुनय करे प्रार्थना ओ रे! जगत कल्याणी की।
श्रद्धा के धागों में गूँथी वर्णों का यह तन्त्र है।
शारदा माँ जब हिय बसे तो एक-एक अक्षर मंत्र है।

तू है ज्ञान की सकल समन्दर मैं एक मछली उसमें हूं,
एक बूँद बस पी सकता हूं,क्षमता के मैं वश में हूं।
मन की चेतना हो आल्हादित तेरी करूणा दृष्टि से,
सकल सृष्टि को तुझमें डूबा दे तार दे ज्ञान की वृष्टि से।
मन मेरा अब मनन करे जो वो मंदिर महामंत्र है,
शारदा माँ जब हिय बसे तो एक-एक अक्षर मंत्र है।

बेटी को सम्मान मिले और भारत स्वर्ग धरा कर दो,
राजनीति हुई कूटनीति अब कूट-कूट नीति भर दो।
एक आँख ना आँसु होवे कोई मुख ना होवे उदास,
द्वेष ईर्ष्या का तम ना हो ज्ञान का हो चहुंओर उजास।
षडयंत्रों से दूर रखे वो नाम तेरा ही यंत्र है,
शारदा माँ जब हिय बसे तो एक-एक अक्षर मंत्र है।

9
कहाँ गये वे आँगन

कहाँ गये वे आँगन अब रहे नहीं वे आँगन।

सूरज अपनी धूप से अपने आँगन को लिपता था,
मंद हवाओं में तुलसी का बिरवा खुश्बू लिखता था।
झाड़ू कंघी बनकर के आँगन के केश सजाते थे,
पँछी होड़ लगाकर के वे मीठी तान सुनाते थे।
कितने पल वे प्यारे थे और कितने थे मनभावन,
'कहाँ गये वे आँगन, अब रहे नहीं वे आँगन।'

कड़ी धूप कितनी भी होती कभी नहीं वो जलता था,
सर्दी का वो सूरज हम पर ताप का उबटन मलता था।
बादल दल जब मोतियों से आँगन को भर जाते थे,
सौंधी-सौंधी महक से मन को आह्लादित कर जाते थे।
शीत सुहानी रही नहीं अब नहीं सुहाना सावन,
'कहाँ गये वे आँगन, अब रहे नहीं वे आँगन।'

दादा-दादी की खटिया के चक्कर खूब लगाते थे,
खेल हमारा देखने को वे चाँद, सितारे आते थे।
गिरने पर चोटों को मिट्टी मानो सहलाती थी,
मरी हुई चींटी से फिर माँ हमको बहलाती थी।
किस्से और कहानियों की यादों के थे दर्पन,
'कहाँ गये वे आँगन, अब रहे नहीं वे आँगन।'

कभी त्यौहारी खुशियों में वो रूप नया ले सजता,
पैरों के नर्तन से मानों ढोल-सा खुद ही बजता।
जीवन के कितने ही खेल है संग हमारे खेले,
आँखों के आँसू भी उसने दामन बनकर झेले।
सुख-दुःख के जो बने गवाही, टूट गये वे आँगन।
'कहाँ गये वे आँगन, अब रहे नहीं वे आँगन।'

10
फिर क्या करोगे ?

नज़रो को चुराकर तुम हमसे नफरत बरसाओगे,
जब पलकें भीगेंगी तुम्हारी किसको बताओगे?

जब एक-दूजे के नयनों में तस्वीरों के थे रंग दिखे,
तब मौन प्रीत की भाषा में न जाने कितने ग्रन्थ लिखे।
हर बात-बात पर क्रोधित होकर जब भी हम लड़ते थे,
फिर कुट्टी होकर मन के कबूतर संदेशे पढ़ते थे
उन यादों के लम्हों को खुद से कैसे भुलाओगे,
जब पलकें भीगेंगी तुम्हारी किसको बताओगे?

हर पल-पल ख़ैर-खबर लेते थे दुनिया से हम बचकर,
पायल बोल बता देती थी कुछ शर्मीली होकर।
जब भी हमने देखी हथेली मेहंदी वाली तुम्हारी,
पलकें तब गिरती ही नहीं थी साँसे होती भारी।
वो मेरे समर्पण के भावों को कैसे मिटाओगे,
जब पलकें भीगेंगी तुम्हारी किसको बताओगे?

मैं मिट्टी का कण ही रहा और तुम प्यारा-सा कुमकुम,
मेरी जगहर रही पैरों में मस्तक चढ़ी सदा तुम।
हम मान भूले अपमान भूले बस एक दुआ रहती है,
मुस्कानें ये हो न कम दिल की आवाज ये कहती है।
ये प्यार के दीपक मेरे मन के कैसे बुझाओगे,
जब पलकें भीगेंगी तुम्हारी किसको बताओगे?

11
माँ-बाप हैं किताबें

माँ-बाप हैं किताबें फुर्सत से उनको पढना,
कई अनकही-सी तुमको कहानियाँ मिलेंगी।

जीवन के हर सुखों का अपना भवन बड़ा है,
माँ-बाप की दुआओं के दम पे वो खड़ा है,
ये त्याग की दीवारें मजबूत आज इतनी
ये भाग्य खुद खुदा से फानूस बन लड़ा है।
नीवों में डाल दी थी इच्छाओं की वो ईंटें,
दब कर पड़ी वहाँ पर निशानियाँ मिलेंगी।

राहें बहुत कठिन थी चलना जरूरी पर था
थी धूप सर पे लेकिन ख्वाबों में एक घर था,
कुछ भाव पल रहे थे रहकर अभावों में भी,
पर इन सभी दुखों से मन उनका बेखबर था।
तलवों में घाव होंगे जो वक्त ने दिये थे,
छालों के पानी में भी चिंगारियाँ मिलेंगी।

खुश हमको देखकर वो खुद मुस्कुराते रहते,
सारी थकानें भूलकर सब मन की बात कहते,
कर्तव्य बोझ जैसे हल्का हुआ था मन में,
पर कर्ज की वो किश्तें चुभती हुई हैं सहते।
मुस्कानों की वो परतें कभी खोलकर के देखो,
उसमें छुपी-सी तुमको मजबूरियाँ मिलेंगी।

12
गाँधी जी

जब नोटों पर गौर से देखे मैने अपने गाँधी जी,
रात मेरे सपने में आये हँसते-हँसते गाँधी जी।

मैने पूछा बापू तुम तो हरदम हँसते रहते हो,
जिसके भी हाथों में जाते मुस्काने ही भरते हो,
कहीं-कहीं रिश्वत खोरी तो कहीं-कहीं है लाचारी,
कहीं खुशी के उजियाले तो कहीं अँधेरी बीमारी।
हालातों को देख कभी तुम क्यों नहीं रोते गाँधी जी,
रात मेरे सपने में आये हँसते-हँसते गाँधी जी।

न्याय मन्दिरों और दतर में खूँटी पर है अटकाया,
रिश्वत ले और ज़मीर बेचकर इमानों को लटकाया,
कहीं पति की बीमारी में देह बेच तुमको लायी,
कहीं मार दी कोख में बेटी थोड़ी नोटें दिखलायी।
पर कायम थी हँसी तुम्हारी कुछ नहीं बोले गाँधी जी,
रात मेरे सपने में आये हँसते-हँसते गाँधी जी।

सुन रे बच्चे मेरे तन पर रहती इक लँगोटी थी,
पद और पैसों से मेरी तो सदा ही दूरी होती थी,
मुझको रूपयों पर छापकर क्या-क्या देखना पड़ता है,
अब नोटों से हटा दो मुझको क्या-क्या सहना पड़ता है।
मन्दिरों में चढ़ कभी तो जुए में हूँ हारा भी।
रात मेरे सपने में आये हँसते-हँसते गाँधी जी।

जैसा छोड़ गया था मैं जो वैसा अब न देश रहा,
पुस्तक नारे और अखबारों में सिमटा संदेश रहा,
नोटों पर कोई न देखे मेरे बूढ़े चेहरे को,
क्या रंग है क्या मूल्य है देखें सबसे पहले वो,
सिद्धांतो की जला होलिका और मने दीवाली भी,
आँखों में आँसू ले चल दिए हँसते-हँसते गाँधी जी।

13
माँ

माना कि मन्दिर जाने से पूरी तेरी मन्नत होगी,
पर माँ चरणों में देखना तू सिमटी-सी इक जन्नत होगी।

जिस हाल में हमको पाला था वर्णन उसका नहीं कर सकता,
उसका तो कर्ज चुकाऊँ क्या मै ब्याज कभी नहीं भर सकता,
कच्ची दीवारें छत टूटी पर मै उसका नक्षत्र रहा।
फटा हुआ आँचल भी मेरी एक सुरक्षा चक्र रहा।
बचपन के कपड़ो में थोड़ी जब निर्धनता झांकी थी,
तब माँ ने सुई-धागे से थोड़ी मजबरी टांकी थी।
सौभाग्य लकीरें बन जाएँ जो भी अपनी मेहनत होगी,
पर माँ चरणों में देखना तू सिमटी-सी इक जन्नत होगी।

जिसकी आँखों का तारा बनकर चेहरे पर मुस्कान रही,
मन्दिर की कोई पूजा थी या ईश्वर का वह ध्यान रही।
हाथों के छालों-सा सम्भाला हर परछाई दूर रखी,
दुनिया की नज़र न लग जाए कालिमा भी भरपूर रखी।
पेट की अग्नि से जब छाती का वो दूध भी सूख गया,
तब मेरी भूख को देखा तो आँखों में पानी रूक गया।
एक दुआ उसके मुख से दुनिया की बड़ी दौलत होगी।
पर माँ चरणों में देखना तू सिमटी-सी इक जन्नत होगी।

वो गीता के हैं छंद रही वो रामायण का सार रही,
वो वेदों की ऋचाएँ तो कुरआन की वो आधार रही,
मन्दिरो की पावन सीढ़ी तो गुरुद्वारे का वो ग्रन्थ रही,
हर मजहब में ऊँचा आसन हर धर्म का पहला पन्थ रही,
कुछ विस्मृत पल की स्मृतियों में खुशियों का वो आँगन होगी,
वो गोकुल की प्यारी गलियाँ कभी पावन वृन्दावन होगी।
धरती की माटी तिलक करे ऊँचाई वो पर्वत होगी,
पर माँ चरणों में देखना तू सिमटी-सी इक जन्नत होगी।

14

बचपन

मोबाइल और कम्प्यूटर में उलझ गया है मन,
लाओ! चार किताबें दे दो जिनमें हो बचपन।

दादी, नानी रही न संग में कौन सुनाये किस्से,
अब तो केवल आधुनिक मम्मी-पापा हैं हिस्से।
समय की दौड़ा-दौड़ी में वो खो गया नटखटपन।
लाओ! चार किताबें दे दो जिनमें हो बचपन।

परी लोक की बीती बातें भूले गीठी लोरी,
इन अंग्रेजी रातों में स्टोरी की है थ्योरी।
हँसी ठहाके किलकारी से रंग लो अब आँगन,
लाओ ! चार किताबें दे दो जिनमें हो बचपन।

चन्दा मामा मून बन गए छत बन गयी टेरेस,
खेल-खिलौने दूर हुए अब कॉम्पिटिशन रेस।
मैदानों का दूर करें अब हम ये सूनापन।
लाओ! चार किताबें दे दो जिनमें हो बचपन।

दिखावटी स्कूलों में अब बनावटी शिक्षा है,
कहाँ गये वे गुरुकुल और कहाँ वो अब दीक्षा है।
बोझिल बस्तों में दब गया उनका अल्हड़पन,
लाओ चार किताबें दे दो, जिनमें हो बचपन।

15

सैनिक और सरहद

मेरा हर कर्म ये सरहद है, धर्म का सार ये सरहद है,
मन्दिर भी तुम्हारे होंगे, भगवान तुम्हारे होंगे,
पर मेरी नज़र से देखो संसार ये सरहद है,
मेरा हर कर्म...।

मेरी सुरीले मीत रसीले के संग दिन गुजरते हैं,
तब खुशहाली की बातों के वो झरने झरते हैं।
आँगन में हर दिन दीपक की लौ भी जलती है,
और मुस्कानों के रंग लिए हर शाम वहाँ ढलती है।
दीवाली तुम्हारी होगी, होली भी तुम्हारी होगी,
पर मेरी नज़र से देखो त्यौहार ये सरहद है,
मेरा हर कर्म...।

माना कि वो बिंदिया काजल हमको सताती है,
पर रंगत वर्दी की हमारी शान बताती है,
वो फागुन वाले गाल गुलाबी छोड़ के आये हैं,
हम मेहंदी के ख़्वाबों वाला दिल मोड़ के आये हैं।
हर फूल तुम्हारे होंगे, हर रंग तुम्हारे होंगे,
पर मेरी नज़र से देखो श्रृंगार ये सरहद है,
मेरा हर कर्म...।

गाँव की गलियाँ आँखों में और घर का आँगना दिल में है,
बाप की बूढी लाठी माँ की दवायें भी मुश्किल में है,
बच्चे भी बातों में सपने वो खूब सुनाते हैं,
और पत्नी के नयना यादों को खूब बहाते हैं।
रिश्ते भी तुम्हारे होंगे, नाते भी तुम्हारे होंगे,
पर मेरी नज़र से देखो परिवार ये सरदह है।
मेरा हर कर्म...।

16

तुम याद आये...।

वक्त के चलते कदम जब रूक गये कुछ पल,
याद आये कल बहुत ही याद आये कल।
नयनों की जलधारा में जब तन गया था जल,
याद आये कल बहुत ही याद आये कल।

शाम की रंगत निहारी जब नदी के छोर पर,
एक सिहरन-सी जगी थी देह की हर पोर पर।
नज़रों के पत्थर से पानी में हुई हलचल....।
याद आये कल बहुत ही याद आये कल।

आश्रुओं से भीगा-भीगा जब हृदय गाने लगा,
आने की उम्मीद का बादल भी तब छाने लगा।
आहटें चौखट की मुझसे कर गयी जब छल...
याद आये कल बहुत ही याद आये कल।

कौन देश है और दिशा है संदेशे जाएँ किधर,
कब तलक मुरझाई सोयेगी प्रतीक्षा भी इधर।
पूछने लगने लगे जब प्रश्न मुझसे हल...

कौन देश है और दिशा है संदेश जाएँ किधर,
कब तलक मुरझाई सोयेगी प्रतीक्षा भी इधर।
पूछने लगने लगे जब प्रश्न मुझसे हल...
याद आये कल बहुत ही याद आये कल।

17

मैं नवदीप सजाऊँगा

प्रणय ग्रंथ-सा पढ़कर तुमको करूँ सदा मैं आचमन,
निर्मल भावों की गंगा से पावन होगा तन।
तब नन्दा दीप जलाऊँगा।

भोर का कीर्तन संध्या नर्तन मंदिर चौखअ जाऊँ,
प्रेम रंग की होली बृज की अवध में जाकर गाऊँ।
नीराजन दीप जलाऊँगा।

अनंग बनकर रात रति की मैं उबटन को लगाऊँ,
पुष्प शरों की कोमलता से देह मैं उसकी जलाऊँ।
मैं दीप रति का जलाऊँगा।

कुछ मन्नत की मौली लेकर बांधुंगा चहुं ओर,
पीपल बड़ के पत्तों पर कुमकुम पानी का पोर।
मैं वृक्ष दीप जलाऊँगा।

तुम चालीसा तुम्ही आरती अर्पित है तन-मन,
मीरा राधा वृंदा रूक्मा सर्व रूप का बन्धन।
मै दीपक मान कराऊँगा।

अंजुली में दिव्य ज्योति को लाओगी रखकर,
अधर की उजली मुसकानों से आओगी जो सजकर।
मै लक्ष्मी दीप निहारूँगा।

धन दौलत और सम्पति की मैं बनाऊँ अर्घ्य की थाली,
इक-दूजे में समावरण हो मिले मोक्ष की प्यालीं
मैं दीपक दान कराऊँगा।

विरह रात के निरह चाँद से बातें चार करूँगा,
मन के अंधियारे को धोकर यादों को भर दूंगा।
आकाश दीप सवारूँगा।

जब छोर न हो कहीं ओर न हो कुछ और न हो बाकी,
पीड़ा व्यथा हो आकुलता भी मन्द हृदय अचला की।
मैं स्मृति दीप जलाऊँगा।
मै नवदीप सजाऊँगा।

18

उजियाले दीप कहाँ चले ?

ओ तमस के संहारक उजियाले दीप कहाँ चले?

दुःखों का अँधियारा दो दिन मुसकुराया,
सुवर्ण आभा बिखेरी उदास चेहरा हरषाया।
देने खुशियाँ दूजों को अन्तस् में तुम स्वयं जले,
ओ तमस के संहारक उजियाले दीप कहाँ चले।

तेरी रोशनी के आगे चाँद छुप गया नभ में,
देखो धरा हुई प्रकाशित गीत मलय गूंजे जग में।
पथ में कांटे कौन दिखाये सपने मन के कहाँ पले।
ओ तमस के संहारक उजियाले दीप कहाँ चले।

माना कि तय है उम्र यहाँ बाती, तेल और माटी की,
फिर से लेना पुनर्जन्म पोंछना आँसू छाती के।
लहरें उजास देना रखकर काली छाया अपने तले
ओ तमस के संहारक उजियाले दीप कहाँ चले।

आई फिर भ्रमण पर वही अमावस काली
भूखे पेट के सामने है खाली पड़ी है थालीं
जो भूल गए थे आँतों की वो पीड़ा उनकी कौन गले
ओ तमस के संहारक उजियाले दीप कहाँ चले?

19

पापा की बेटी

धीरे-धीरे चुपके-चुपके कानों में कुछ कहती थी,
न राजा की न रानी की, वह पापा की बेटी थी।

मीठी-मीठी तुतली बोली से वो पास बुलाती,
छोटे उजले श्वेत दंत वो गालों में थी चुभाती,
बड़े-बड़े जूतों में नन्हें पांव जो डाल के चलती थी।
ना राजा की...

छोटी-छोटी जिदें करके बातें वो मनवाती,
कभी-कभी वो रूठ के कोने में जाकर छुप जाती।
कोमल-कोमल हाथों से मुझे मार-मारकर हँसती थी
न राजा की...

बिंदिया, लिपस्टीक, पावडर लगाके सिर पे ओढी साड़ी,
नन्हें हाथों में पहनी थी, मम्मी की वो चूड़ी,
गुड्डे का गुड्डी के संग में नीत वह ब्याह रचाती थी,
न राजा की...

जब भी घर पे आता दोनों हाथ फैलाएँ आती,
मम्मी की दिनभर की शिकायत रोज नई वो करती
मुझको घोड़ा बनाकर के वह मेरी सवारी करती थी,
न राजा की...

देखते-देखते खत्म हुई थी ये बचपन की कहानी,
तितली के पीछे उड़ते-उड़ते हो गई कब वो सयानी,
अश्रुधारा आँखों वाली डोली में जो बैठी थी,
नाराजा की...

समय का पंछी उड़ता-उड़ता बैठा ऊँची डाली,
बूढी, धुंधली आँखें छाई रात वो फिर अंधियारी,
तुलसी-सी वो महक लिये, पहचान में नहीं आई थी,
दिल की आँखों से देखा तो, वो पापा की बैठी थी।

20
माँ शारदा से विनती

कलम से निकले शब्द हमारे खुशियों का अभिप्राण हो,
मात शारदे विनती है हर प्राणी का कल्याण हो।

प्रेम सुमन की खुशबू से हर इक घर महका-महका हो,
ईर्ष्या, द्वेष रहे नहीं मन का पंछी चहका-चहका हो।
हर आँगन तुलसी की क्यारी हर प्राणी निरोग रहे,
सद्कर्मों का रहे आचरण परमातम से योग रहे।
दुष्कर्मों को भेदने वाला हर मन में एक बाण हो,
मात शारदे विनती है हर प्राणी का कल्याण हो।

भारत का उन्न्त ये शिखर और ऊँचा सबसे भाल रहे,
जगदगुरु सिरमौर बने और अभिमानी सम्भाल रहे।
राजनीति का गन्दा पानी गंगा में अब छोड़ दो,
न्याय नीति और नैतिकता को शुद्धातम से जोड़ दो।
ऐसा भारत हो धरती पर दुनिया में जयगान हो,
मात शारदे विनती है हर प्राणी का कल्याण हो।

हर नारी की अस्मत उसकी किस्मत पर न रहने दो,
दु:शासन के हाथ कटें ऐसी तलवारें चलने दें।
देवी का दर्ज़ा है मिला तो पूजा उसकी होती रहे,
कोई नज़रे हो नहीं पापी दुष्टों की न ज्योति रहे।
तेरा रूप रहे हर नारी हर बेटी का सम्मान हो,
मात शारदे विनती है हर प्राणी का कल्याण हो।

21
मनुहार

बादल अब तो आ जाओ,
अवनि की मनुहार है।

तरस गये हैं कण्ठ धरा के
वृक्षों के तन मुरझा गये,
विरहन के बेसुध हृदय को
वेग मलय के उलझा गये।

बूँदों के घुंघरू को पहनकर
नर्तन का त्यौहार है।

शाखाओं के मुखड़ों पर
झुर्रियाँ पड़ने वाली हैं,
छेर से मिलने पर तुमसे वे
लिपट के लड़ने वाली हैं।

प्रणय युद्ध का अनूप नजारा
देखना अब की बार है।
तपती धूप ये हँस-हँस कर
देखो बहुत चिढाती है,
मन भावों के कदम धरा अब
नभ की ओर बढाती है।

प्रेम निमंत्रण के बदले
आलिंगन का व्यापार है,
बादल अब तो आ जाओ,
अवनि की मनुहार है।

22

हाथों की रेखायें

जब हाथों की रेखाओं के पथ जीवन में प्रतिकूल हुये,
तब अन्तस् के कोने सिमटे नयनों के आँसू शूल हुये।

जब मेरे नाम की चर्चा हुई ग्रह-नक्षत्रों की बस्ती में,
उपहास भरे मुँह मोड़ गये, हँस-हँसकर अपनी मस्ती में।

जो मुझसे दूर रहा करते थे, दिन उनके अनुकुल हुये।

जब संबंधों की बात चली परिभाषा बदली अपनों की,
आँखों से पलकें रूठ गयी चादर नम हो गयी सपनों की।

कभी पाँवों में बिछ जाते थे, वे पथरीले फूल हुये।
बस एक हमारी आहट से घर चौखट उनके सजते थे,

मुस्कानों के दीपक लेकर मन त्यौहारों से लरजते थे।

अब लगता जैसे हम उनके जीवन की बड़ी भूल हुये,
तब अन्तस् के कोने सिमटे नयनों के आँसू शूल हुये।

23

बदला भाग्य

आँखें मेरी आँसुओं में डूबी
मगर प्यासी तेरे दीदार की।
ज़माने में ढूँढू घर को मेरे
दरारों में अटकी दीवार की।

नदियाँ स्वयं डूब जाना चाहे
अपनी ही मोझों के रास्ते,
सरगम रूदन अब है बन गयी
अपनों के टूटे प्यार की।

हर एक मुखौटा हँसता हुआ
दिखता है न जाने क्यों मुझे,
दिखावे की रस्में न पहचानता
पल-पल बदलते संसार की।

रिश्तों के धागे तो मजबूत थे
मोती मगर टूटने हैं लगे,
डोरी भी अब तो है जलने लगी
अपनों की वो एतबार की।

दिन के उजाले है खाता रहा
रातों के भूखे ये सन्नाटे हैं,
अँधेरों में राहे मैं तकता रहा
नहीं कोई आहट मेरे यार की।

24

मन्नत

एक सितारा फलक से जुदा जब हुआ,
मुझको मन्नत में तुम याद आने लगे।
तपते मौसम में ठंडी हवा जो चली,
बीते पल कानों में मुनगुनाने लगे।

जब सावन के मौसम की सरगम सजी
जल बूंदों के घुंघरू की छमदम बजी,
मेघदूतों ने खुद गया मल्हार है
धरती करती गगन से मनुहार है।
आसमाँ का मिलन यूँ धरा से हुआ
मेरे हमदम मुझे याद आने लगे।

गीत पंछी सवेरो के गाने लगे
हर दिशाओं के कोनों में हलचल मची
आँख सूरज ने खोली तो ऐसा लगा
आसमाँ की हथेली पे मेहंदी रची।
रात को चाँद मद्धम-सा दिखने लगा
चांदनी बन के तुम याद आने लगे।

सात रंगों का इंद्रधनुषी खिला
जैसे अम्बर के हाथों में चूड़ी सजी,
बादलों में सूरज छुप के झांके ज़रा
अंगूठी एक नगीने-सी लगने लगी।

ठण्डी बंदें मुझे जब जलाने लगी
तुम बन के रति याद आने लगे।

दिल के हिस्सों में न जाने क्यों शोर है
तेरी यादों के तुफानों का दौर है,
आँखों में अब समाये न खारा पानी
छुप के रोते समन्दर की है कहानी।
ज्ब साँसें भी अंतिम सफर पर चली
हमसफ़र बिछड़े तुम याद आने लगे।

25

निगाहें

आपने ये निगाहें झुका ली हैं क्यों ?

मौन रहने की ली क्या कोई साधना,
कुछ सुनने सुनाने की है प्रार्थना।
आज अधरों पे काई तो सरगम सजे,
बोल मुझको तुम्हारे यूं मीठे लगे।
बॉसुरी को शहद में डूबा दी हो ज्यों,
आपने ये निगाहें झुका ली हैं क्यों ?

पलकों से कुछ कहाँ और उठाओ उन्हें,
नयनों की पाती नजरों से भेजूं तुम्हें।
मेघदूत दिल के पन्नों पे छपने लगे,
एक झलक मुस्कानों की तो ऐसी लगे,
कोई कर्जे की किश्तें चुका दी हो ज्यों,
आपने ये निगाहें झुका ली हैं क्यों ?

घर से निकली तो सूरज ने उबटन मला,
चाँद की झिलमिलाती हो सोलह कला।
स्वेद बूँदे ये माथे की लटकन लगे,
रूप ये आज मुझको तो ऐसा लगे,
धूप में चाँदनी को सुखा ली हो ज्यों,
आपने ये निगाहें झुका ली हैं क्यों ?

26

कभी नही हो सकता

बिन उजड़े ही बसन्त आये
ये तो कभी न हो सकता,
इश्क में अश्क नहीं बरसे,
ए यार कभी नहीं हो सकता।

धरती अम्बर चाँद औ सूरज
एक -दूजे को खींचते है,
बिन मतलब के रिश्तों का
संसार कभी नहीं हो सकता।

अनदेखो घावों से भरा है
मेरी पीठ का हर हिस्सा,
दुश्मन के दूरों से हुए ये
वार कभी नहीं हो सकता।

पाने और खोने की बही में,
हिसाब बना है ये जीवन,
लेकिन माँ का व्यापारों-सा
प्यार कभी नहीं हो सकता।

अंकुरित एक बीज हुआ है
जन्म नया ये देखों तुम,
मिट्टी का अहसान जड़ो में
भार कभी नहीं हो सकता।

27

हादसों का शहर

दिन भी छुपने लगे रात रोने लगी,
अब नगर बन गया हादसों का शहर।
नागफणियों से सजने लगे घर यहाँ
आ के देखो जरा हादसों का शहर।

जिनकी मुस्कान हमको लुभाती रही
वो भरोसे के खंजर लगे पीठ में,
अब शिकायत करूं कौन-से थाने में
मेरा दिल ही हुआ हादसों का शहर।

रोज पर्दा गिराकर के चेहरे पे वो
हर गली हर सड़क पर गुजरते रहे,
एक दिन बिन नकाबों के गुजरे वो क्या
ये शहर बन गया हादसों का शहर।

एक दिन माँ की गोदी में सर रख दिया
नींद खुद मुझको लोरी सुनाने लगी
एक आँसू गिरा उसकी आँखों से तो
ये जीवन बन गया हादसों का शहर।

खिलखिलाती महकती से कलियाँ सभी
बागबां की हिफाजत में रहती यहाँ,
एक दिन बागबां ने मसल दी कली
सहमा-सहमा रहा हादसों का शहर।

28

मैं खड़ा ही रहा

मैं खड़ा ही रहा प्रीत चौराहे पर,
और प्रतीक्षा तुम्हारी मैं करता रहा।
बाँधने के किय मैने कितने जतन,
पर समय अपनी हद से गुज़रता रहा।

हाथ में हाथ लेकर के उम्मीद का
चन्द बातों का चन्दन घुलता गया,
चल दिए तुम झटककर दामन मगर,
रात भर हाथ मेरा महकता रहा।

दे ज़माने को खुशियों का बिस्तर सुनो।
हमने चादर गमों की है ओढ़ी सदा,
मुस्कुराहट की बारिश में भीगे हैं वे
मैं चरागों-सा भीतर सुलगता रहा।

है बनावट के फूलों की खुश्बू यहाँ
और दिखवट के रिश्तों का व्यवहार है,
नेह की ये हवाएँ भी ऐसी चली,
दम धुएँ का यहाँ पर है घुटता रहा।

29

गीत रसीले लिख डाले

जब-जब जीवन कड़वाहट में डूब गया,
तब-तब हमने

सब रिश्तों की धाराओं ने
नदियों ने आँखें प्यासी दी,
तब ऊपर वाले ने भी तो
वो छप्पर फाड़ उदासी दी।
जब-जब जीवन में चेहरा बेरंग हुआ,
तब-तब हमने फूल सजीले लिख डाले।

राहों में पड़े मकरन्द भी जब
काँटों-सी चुभन को देने लगे,
मेरे हिस्से के उजियाले
अंधियारे वापस लेने लगे।
जब-जब धोखे होश में हमने खाये हैं,
तब-तब हमने राग नशीले लिख डाले।

न ठौर रहा न छोर रहा
न कदमों को आराम रहा,
मैं ढूँढ रहा खुद को जग में
बस एक यही है काम रहा।
जब-जब किस्मत ने हमको भटकाया है,
तब-तब बंजारों के कबीले लिख डाले।

30

चलो हम गीत को ढूँढें

कहीं भूली किताबों में, छुपे उनमें गुलाबों में,
अधूरी नींद ख्वाबों में चलो हम गीत को ढूँढें।

बँटी है जिन्दगी अपनी न जाने कितने भागों में,
सदा उलझे रहे हैं हम यहाँ रिश्तों के धागों में।

कहीं सपने हवेली में, कहीं दुल्हन नवेली में,
कहीं जीवन पहेली में चलो हम गीत को ढूँढें।

बुनी जो प्रीत की चादर किनारे क्यों उधड़ते हैं,
मिलन के दौर में ही मीत जाने क्यों बिछड़ते हैं?

कहीं बेटी विदाई में, कहीं प्रियतम जुदाई में,
कहीं माँ की दुहाई में, चलो हम गीत को ढूँढें।

कभी रेखाएँ उलझी तो हथेली मुस्कुराती है,
कभी होनी भी टलती है कहीं अनहोनी आती है।

कहीं आँखों के पानी में, कहीं बीती कहानी में,
कहीं सरहद जवानी में, चलो हम गीत को ढूँढें।

सफर जीवन का उतना है कि जितना उम्र का लेखा,
चलो हँसकर बिताएँ हम यहाँ किसने है कल देखा।

कहीं अल्हड़-सी मस्ती में, कहीं भूली-सी बस्ती में,
कहीं मल्हार कश्ती में, चलो हम गीत को ढूँढें।

31

रातभर

याद उनकी सताती रही रातभर,
आँख मेरी नहाती रही रातभर।

हम कहानी अंधेरों से कहते रहे,
रात पीड़ा सुनाती रही रातभर।

चाँदनी से की हमने बहुत मिन्नतें,
वो अँधेरा बताती रही रातभर।

हम दिखाते रहे टूटती साँस को,
वो हँसी में उड़ती रही रातभर।

आँखों से पलकें रूठी हुई हैं अभी,
नींद उनको बुलाती रही रातभर।

फिर गिरा याद का एक सिक्का यहाँ,
इक खनक ही जगाती रही रातभर।

32

अंदाज

उनको लुभा रहे हैं अंदाज अब शहर के,
लो उड़ गये हैं पंछी अपने ही उस शजर के।

रोने लगी थी नदिया पूछा जो हाल उनका,
करने लगी थी शिकवे वो अपनी ही लहर के।

पहचान भी सके न हम स्वाद दोस्ती का,
हर कण रहे थे मीठे धीमे-से उस जहर के।

रूठी हुई है सरगम और शब्द मौन सारे,
हम गीत गा सके न फिर अपनी ही बहर के।

फिर हौंसलों को लेकर नंगे बदन चले थे,
हम राहगीर थे उस तपती-सी दोपहर के।

33

दुआ

बस यही एक तुमसे दुआ माँगते,
साथ रहने की मीठी सजा माँगते।

खूबसूरत यहाँ जिसका अंजाम हो,
एक तुमसे वहीं हम खता माँगते।

तुमसे मिलने की बेचैनियाँ दूर हो,
वो हकीमी दिलों की दवा माँगते।

खोल दो खिड़कियाँ मन की फिर आज तुम,
प्रीत से महकी रिश्ते हवा माँगते।

छोड़कर चल दिये आज वो घोसला,
अब नये पंछी घर भी नया माँगते।

34

आजकल

स्वार्थ के पर्दों में रिश्ते रो रहे हैं आजकल,
बीज मिट्टी में विषैले बो रहे हैं आजकल।

प्रीत वाली डोर में उलझन कभी सुलझी नहीं,
भार संबंधों का दिल में ढो रहे हैं आजकल।

धन जमा करने यहाँ हम रात दिन हैं जागते,
मन की आँखें बंद करके सो रहे हैं आजकल।

खूब काला हो गया है मन का ये हीरा यहाँ,
कोयलों की खान में ही धो रहे हैं आजकल।

ये भी चाहा वो भी चाहा पर कहाँ संतोष है,
जो भी पाया है यहाँ अब खो रहे हैं आजकल।

35

बदले-बदले

धरती और अम्बर के देखो आँचल बदले-बदले हैं,
अब सावन में बरसने वाले बादल बदले-बदले हैं।

जिन आँखों में बसते थे हम बचकर बुरी नज़रों से,
आज उन्हीं नयनों के भीतर काजल बदले-बदले हैं।

जिनकी सौगन्ध खाते थे हम मन के पावन मंदिर से,
उसी अंजुली में अब गंगा के जल बदले-बदले हैं।

जिनके लिए रातों में अपना दीप जलाकर रखते थे,
ऐसी उज्जवल रातों के अब हरपल बदले-बदले हैं।

जिनके जीवन में हमने खुद को समर्पित रखा था,
उनकी नज़रों में अब हम एक पागल बदले-बदले हैं।

36

दौलत

भर के तिजोरी प्रेम की खाली नहीं होती,
दिल में जमा दौलत कभी काली नहीं होती।

प्यार के कागज की मुस्कान की एक नोट हो,
व्यवहार के बाजार में जाली नहीं होती।

अपनों का गम ही दिल में छुपा के रक्खा है,
वरना तो इतनी गालों पर लाली नहीं होती।

जिन्दगी में एक डर है आपके खो जाने का,
वरना कभी तकलीफें हमने पाली नहीं होती।

दो वचन निकले कभी माँ-बाप के मुख से,
हो दुआ या बद्दुआ खाली नहीं होती।

37

अतीत

अतीत के गम भुलाकर तो देखो,
धूप में पसीना सुखा कर तो देखो।

अँधेरों में परछाई साथ छोड़ती है कब,
उम्मीद का दीया जलाकर तो देखो।

छोड़ दिया साथ ज़माने ने तुम्हारा,
खुद से हाथ मिलाकर तो देखो।

डर है क्यों तालाब की गहराई से,
ज़िद की नाव उतार कर तो देखो।

कैसे होगी छवि बेरंग ज़िन्दगी की,
सपनों के रंग फैलाकर तो देखो।

38

बेटियाँ

सुबह की सुहानी-सी धूप होती बेटियाँ,
पूनम के चांद का हैं रूप होती बेटियाँ।

अपने घर के आँगनों की हैं वो रंगोली,
इन्द्रधनुषी का नूर होती बेटियाँ।

माँ-बाप को दुःखों के कभी शूल जो चूभे,
जीवन के बगीचे का फूल होती बेटियाँ।

कौन जाने बेटा बुढापे की दवा हो,
पर प्यास में जरूर पानी होती बेटियाँ।

जिन्दगी में बेटियों को दंश मानते,
अपने ही वंश का ये अंश होती बेटियाँ।

हाथों की अंजुली में वो ठहरी हैं पानी-सी,
''दो छोर'' की नहर में हैं ये बहती बेटियाँ।

माँ-बाप की आँखों में नमी बन के वो रहे,
डोली में अश्रु बन के हैं पिघलती बेटियाँ।

माना कि एक बेटे की भी आस होती है,
पर उसके लिये क्यों हैं मारी जाती बेटियाँ।

39

इक पल

तुम्हारे दिल की घड़ियों में मेरा इक पल भी आएगा,
कभी यादों की नदियों में पुराना जल भी आएगा।

ये माना तुम अभी तक हो नयी दुनिया की राहों में,
कभी यह मोड़ पर तुमको नज़र पागल भी आएगा।

अभी तो बन्द है पानी ये आँखों का किनारे पर,
कभी आँखों से बह-बहकर तेरा काजल भी आएगा।

दर ओ दीवार हैं खामोंश कोने शोर करते हैं,
छतों को चीरता रोता कोई बादल भी आएगा।

हमारी बातों की बारिश में हरपल भीग जाता था,
उसी सावन की बूँदों का कभी वो कल भी आएगा।

40

किस्मत

किस्मत खुशियों की किताब माँगती है,
ज़िन्दगी साँसों का हिसाब माँगती है।

तंग आ चुकी हैं उम्रभर अंधेरों से,
अब तो रातें भी आफताब माँगती हैं

मुश्किल है जीना सादगी की चादर में,
यहाँ दुनियादारी कुछ रूआब माँगती है।

घुट रहा है दम परिवार के साथ पानी में,
नयी मछलियाँ अलग तालाब माँगती हैं।

रास नहीं आ रहा उन्हें चुपचाप यूँ बहना,
नदियाँ भी आजकल सैलाब माँगती हैं।

41

सहर

अमावस के तम से सहर पूछता हूँ,
मैं चौराहों से इक डगर पूछता हूँ।

अंधेरों से इतना क्यों गाफिल हुआ मैं,
उल्लुओं से उजालों का घर पूछता हूँ।

खुश होगे बेशक जहाँ में तुम अपने,
हवाओं से फिर भी खबर पूछता हूँ।

समन्दर ही है आशियाना जो उनका,
डूब जाने का उनसे ही डर पूछता हूँ।

मचलकर चली थी भंवर से जो मिलने,
वो किनारों से उनकी लहर पूछता हूँ।

अहसासों की मिट्‌टी में बोया था जो,
उन यादों का आबाद शजर पूछता हूँ।

42

चिट्ठियाँ

दोपहरी रेत-सी लगती है तपती चिट्ठियाँ,
मन के बादलों से कभी होती भीगी चिट्ठियाँ।

धडकनों के शब्द-शब्द उनको समर्पित किये,
फिर भी वो न बांच सके मेरे मन की चिट्ठियाँ।

चुभती यादें लिये सब सहती ससुराल में,
फिर भी माँ को लिख न सकी बेटी अपनी चिट्ठियाँ।

कागजों की एक छुअन न जाने क्या अजीब थी,
दिल की हर नसों में बहती खून होती चिट्ठियाँ।

धुंधली आँखों से देखा वक्त की माटी जमी,
थी जो कभी खिलखिलाती और रूलाती चिट्ठियाँ।

43

क्या लिखूँ

दिल की हो आँखों की हो संवेदनाएँ क्या लिखूँ,
रात-दिन अपने हृदय की वंदनाएँ क्या लिखूँ।

भारती माता का देखो रक्त रंजित भाल है,
तुम कहो अपनी कलम से प्रेम कथायें क्या लिखूँ।

काँपते नंगे बदन में भूख भी है रो रही,
चीखती आवाज में खुद की व्यथायें क्या लिखूँ।

बाहरी पीड़ा से मन का दर्द ये ज़्यादा हुआ,
लाइलाज़ी मर्ज़ की अब मैं दवाएँ क्या लिखूँ।

दम धुए का घुट रहा है खिड़कियाँ ये खोल दो,
इन विषैले मौसमों में प्रीत हवाएँ क्या लिखूँ।

तुम अदालत पैरवी तुम फैसला भी तुम कहो,
बेगुनाही में भी अब खूद की सजाएँ क्या लिखं।

44

एक प्रेम गज़ल

प्यार का गर इक काफ़िया होता तो एक प्रेम गज़ल लिखता।
बंज़र दिल में फूल जो खिलता तो एक प्रेम गज़ल लिखता।

खुशकिस्मत हैं दिल वो सारे प्यार की खुशबू छूते हैं,
मेरे दिल को भी कोई छूता तो एक प्रेम गज़ल लिखता।

आँखें सब की बरस रही हैं याद यूँ अपनों को करके,
मेरे लिए भी कोई रोता तो एक प्रेम गज़ल लिखता।

हर इक दिल घायल-सा पड़झ है प्यार के कोमल तीरों से,
नज़रों का एक तीर ही लगता तो एक प्रेम गज़ल लिखता।

सबकी नींदें महकी-महकी अपने सनम के ख़्वाबों से,
मेरे सपनों में कोई आता तो एक प्रेम गज़ल लिखता।

यूँ तो बहुत ही बरसे बादल दिल के घर की इस छत पर,
दिल की गर वो प्यास बुझाता तो एक प्रेम गज़ल लिखता।

कहते हैं सब प्रेम यहाँ पर खतरों का है एक दरिया,
मैं थोड़ा-सा डूब जो जाता तो एक प्रेम गज़ल लिखता।

मौसम यूँ तो बहुत हैं आये प्रेम की रूत ही आई नहीं,
दो पल का बधुमास ही आता तो एक प्रेम गज़ल लिखता।

45

दस्तूर

रिश्तों के मोलभाव में मगरूर हो गये।
जितने भी थे करीब सभी दूर हो गये।

गैरों के दर्द को ये मेरा दिल तो सह गया,
अपनों के जख्म जाने क्यूं नासूर हो गये।

उनको भी कभी हमने पनाहों में रखा था,
ये प्रीत के बंधन मेरे कसूर हो गये।

माँ-बाप को ही अपने जब छोड़ जाते हैं,
आँगन के पेड़ काटने दस्तूर हो गये।

46

आह लिखूँ

जीवन की कुछ चाह लिखूँ
या दर्दों की आह लिखूँ।

उजियाले चौराहों पर एक,
अंधियारों की राह लिखूँ।

कहने को ठंडक आँखों में
दिल के जलते दाह लिखूँ।

ज़िल्लत को मै। अनदेखाकर,
मन की कोरी वाह लिखूँ

दिल के टूटू छप्पर में भी,
देखो प्रीत की गाह लिखूँ।

47

इत्र

बनावटी है इत्र से कागज के फूल सजा रहे,
महकी नहीं बहकी हुई हवा के झोंके आ रहे।

रेत की बुनियाद पर सपनों की हैं बुलंदिया,
हवा से बात कर रहे जवाब नहीं आ रहे।

तीर अंधेरों में चले लक्ष्य हैं भटके हुए,
शब्दभेदी बाण भी तो ढूँढ नहीं पा रहे।

राग गूंगे हो रहे हैं टूट रही रागिनी,
दबे हुए है कण्ठ यहाँ गीत भय के गा रहे।

बुझी हुई चिंगारियों को कौन हवा दे रहा,
मन की आग न बुझी तो घर को आग लगा रहे।

48

मन की पीड़ा

मन की पीड़ा ही जाने बात बतानी मुश्किल है,
ग्रहण लगे जब उजियारों को रात बितानी मुश्किल है।

जीते जी तो माँ-बाप का भार नहीं वो सह पाये,
मरने पर उनसे तो फिर वो राख उठानी मुश्किल है।

उनकी नज़रो से ही आशीष मिल जाये तो भाग खुले,
नज़रों से गिर जाओ फिर तो आँख मिलानी मुश्किल है।

मिली अगर बद्दुआ जो तुमको मात-पिता के उस दिल से,
कर लो फिर तुम जतन ओ यारों लाख छुपानी मुश्किल है।

नहीं पूजा गर हमने अपने घर के उन भगवंतों को,
अपनी औलादों से फिर तो आश लगानी मुश्किल है।

49

दीप जलाना सीख लो

मन के कोने में भी तुम एक दीप जलाना सीख लो,
आग में तन को तपाकर फिर गलाना सीख लो।

फूलों की खुश्बु मिलेगी जिन्दगी की राह में,
पहले कांटों की डगर पर पग चलाना सीख लो।

क्या हुआ जो रात का घनघोर अंधेरा छा गया,
जुगनुओं-सा खुद को थोड़ा टिमटिमाना सीख लो।

रातभर बाती ने जलकर तम को रोशन है किया,
दूसरों के घावों पर मरहम लगाना सीख लो।

गर नहीं अंधियारों में ये दीपमाला तो भी क्या,
तारों के उजियालों में ही मुस्कुराना सीख लो।

नागमणियों जैसी होगी तेज आभा जिन्दगी,
पहले थोड़ा तुम ''नरेन्द्र'' विष खाना सीख लो।

50

बातें नहीं आती

बचपन की खुश्बू वाली किताबें नहीं आती,
गिरकर भी जो आती थी मुस्कानें नहीं आती।

वो चाँद को बुलाना तारों से बात करना,
खुली छत पे सोने वाली रातें नहीं आती।

बंद आँखों में हैं संभाली हमने सूरत,
दिल को अब तुम्हारी यादें नहीं आती।

किस पते पर हैं खोयी पत्रियाँ और चिट्ठी,
अब डाकिये की मीठी आवाजें नहीं आती।

तजुर्बे जिन्दगी के मिलते थे जुबानों पर,
वो चोपालों की हमको बातें नहीं आती।

51

वक्त

गम की हवाओं में सदा ही मुस्कुराना चाहिये,
हो वक्त कैसा भी हमें वो आजमाना चाहिये।

सारे जहाँ की पा के दौलत साथ क्या ले जाएँगे,
माँ-बाप के आशीष का हमको खजाना चाहिये।

क्यों जल रहे उनकी हँसी में दूसरों को जो मिली,
उनकी खुशी की बारिशों में भीग जाना चाहिये।

देखो कभी न हो निगाहें लक्ष्य से भटकी हुई,
जो आँख को ही भेद डाले वो निशाना चाहिये।

जागिर नहीं दौलत नहीं माँ भारती है माँगती,
जो जान की बाजी लगा दे वो दीवाना चाहिये।

52

समर्पण

प्यार की इक गणित वो पढ़ाने लगे,
जोड़कर फिर हमें वो घटाने लगे।

स्वार्थ से भीगे कपड़े भी वो आजकल,
प्रेम की डोरियों पर सूखाने लगे।

सींचकर भावनाओं की मिट्टी यहाँ,
वृक्ष काँटों के अब वो उगाने लगें

प्यार का इक समन्दर जो दिल में बना,
अब वहीं आँखों से हम बहाने लगे।

एक भरोसे का सौदा तो करते सनम,
क्यों फरेबी के सिक्के कमाने लगे।

हम समर्पण को लेकर चले हैं यहाँ,
प्रेम की मुस्कानों को लुटाने लगे।

53
दिल्लगी

किस तरह अब हम निभाएँ दोस्ती महंगी हुई,
धड़कने कहने लगी अब दिल्लगी महंगी हुई।

देर तक अँधियार करते शोर कितना आजकल,
चाँद भी छुपने लगा अब रोशनी महंगी हुई।

साँस लेने का चढ़ा हैं कर्ज़ कितना देख लो,
मोत की सौदागरी में ज़िन्दगी महंगी हुई।

अब समन्दर ने कहा नदियों पे हक मेरा हुआ,
बारिशों में भी धरा की तिश्नगी महंगी हुई

है दिखावट का ज़माना तुम कहाँ टिक पाओगे,
विकृति की भावना में सादगी महंगी हुई

कर्म और विश्वास को तो कर दिया हमने हवन,
मन्दिरों में हमने देखा बन्दगी महंगी हुई

54
जंग

पँख हैं उड़ना बाकी है,
जंग है लड़ना बाकी है।

यूँ तो सम्भाला खुद को,
दिल का जुड़ना बाकी है।

मंजिल ढूँढने हैं निकले,
कितना मुड़ना बाकी है।

सपने तो पत्थर ही है,
थोड़ा गढ़ना बाकी है।

आँखें मेरी कहती हैं,
अनका पढ़ना बाकी है।

यादों के बधुबन में फिर,
पत्ते झड़ना बाकी है।

ईश्वर माना है मुझको
सूली चड़ना बाकी है।

55

सरगम

दिलों का है जहाँ लेकिन यहाँ धड़कन हीं मिलती,
थके हैं साज जीवन के मगर सरगम नहीं मिलती।

दिखा दो ज़ख्म तुम चाहे ज़माने भर के लोंगों को,
नमक वालों की बस्ती है यहाँ मरहम नहीं मिलतीं

अमावस राज करती है जकड़कर चाँद को नभ में
ये वसीयत हैं अँधेरों की यहाँ पूनम नहीं मिलतीं

दिखावट के बाज़ारों में बनावट खूब बिकती है,
छुपा चहरे को रोते पर ये आँखें नम नहीं मिलती।

दिया है बादलों को जल यहाँ हमने उधारी में,
मगर बारिश की धाराएँ हमें हरदम नहीं मिलती।

56

चादर

आरती के दीये अब तो बुझने लगे,
मंदिरों के कबूतर भी उड़ने लगे।

जिस सहारे उन्हें ढूँढता मैं रहा,
वो निशां कदमों के भी हैं मिटने लगे।

छोड़ विषदंतों को सादगी क्या धरी,
साँप के बिल में मेंढक हैं रहने लगे।

बिन अँधेरों के भी उल्लू झपटें यहाँ,
अब उजाले भी धोखे हैं देने लगे।

प्यार की पहली खुश्बू थी आने लगी,
जब किताबों के पन्ने पलटने लगे।

प्रीत की इस गणित में था जोड़ा जिन्हें,
हम उन्हीं की इबारत से घटने लगे।

एक चादर संभाली थी रिश्तों की जो,
हम किनारों पर आकर हैं फटने लगे।

57

बंधन

तुम्हें शायरों की जरूरत नहीं है,
हमें कागजों की जरूरत नहीं है।

तुम्हारी ये आँखें निहारें सदा हम,
हमें आईनों की जरूरत नहीं है।

ठहर-सी गयी है दिलों में बहारें,
हमें मौसमों की जरूरत नहीं है।

हँसी है तुम्हारी खनकती हुई ये,
तुम्हें पायलों की जरूरत नहीं है।

सिमटने लगे हैं मुहब्बत में बंधन,
यहाँ दायरों की जरूरत नहीं है।

58

हिस्सेदार

जिन्दगी में हर कदम क्यों खार मिल गये,
प्यास को भी खूब खारे धार मिल गये।

मुश्किलों में साथ कोई मीत न रहा,
राय देने वाले हमको चार मिल गये।

देख धोखों की वही नादान हरकतें,
पीठ वाली ढाल के बाजार मिल गये।

क्या गजल है गीत क्या मैं जानता नहीं,
आपको जो देखा तो अशआर मिल गये।

काम आते बेटे कुछ माँ-बाप को यहाँ,
आज उनके धन के हिस्सेदार मिल गये।

59

समय के छाले

समय के छाले रोने लग गए जब अपने ही पाँव में
समझौता कर बैठ गए तब हम काँटों की छांव में।

खेल हमारा और खिलाड़ी चौसर भी तो अपना था,
लेकिन सब कुछ हार गए हम विश्वासों के दांव में।

माना कि अनजाना था वो शहर जहाँ हम लूट गए
लेकिन घर के ताले टूटे मेरे अपने गाँव में।

रिश्तों की नदिया में देखा पानी साफ़ नज़र आया
चुपके से फिर जाने कैसे छेद हुए हैं नाव में।

मन्दिरों की घण्टियों के स्वर में थे महफूज सभी,
जाल में लेकिन फंसे कबूतर कुछ दानों के चाव में।

60

अखबार

कुछ तकरारें नीखी कुछ प्यार हमारा हो,
और प्रणय भरा ये दिल स्वीकार हमारा हो।

रिश्तों का यह बन्धन कुछ ऐसे बंधने दो,
तुम्हारे सपनों पर अधिकार हमारा हों

न कोई अदालत हो नहीं कोई गवाही हो,
मन के इस कागज पर इकरार हमारा हों

दुनिया की दौलत की कोई चाह नहीं मुझकों,
हाथों की बातों का व्यापार हमारा हो।

एक होंठ तेरे कागज एक होंठ मेरी हो कलम,
फिर प्रीत कहानी का अखबार हमारा हो।

61

देख लिया

काँटों पर चलकर देख लिया,
पानी में जलकर देख लिया।

औरों पर हमने करके भरोसा,
खुद को ही छलकर देख लिया।

जिन हाथों से खूब दिया था,
उनको ही मलकर देख लिया।

जिनके लिए उबले थे बर्फ में,
अब खुद ही गलकर देख लिया।

रिश्तों के हर एक साँचे में,
पानी-सा ढलकर देख लिया।

तन्हाई के डंक में तुम बिन,
हमने पलकर देख लिया।

62

तिजोरी

एक दिन देख ली दौलत जो पिता ने कमा कर रखी थी,
दिल की तिजोरी में कुछ ख्वाहिशें जमा कर रखी थीं।

सर ढकने को एक छोटा-सा घर तो बना दिया था,
लेकिन मेरे सपनों की बड़ी इमारत बना कर रखी थी।

मैं अक्सर देखता था वो पैदल ही चला करते थे,
मेरे कदमों की ऊँचाइयाँ आँखों में समा कर रखी थी।

मैं ढूँढता रहा उनकी मुस्कान के पीछे की हकीकत को,
न जाने मन की संवेदनाएँ कहाँ छुपा कर रखी थी।

कई बार टटोलते थे वे अपनी खाली जेबों को बार-बार,
मजबूरी में बहाने और बहानों में मजबूरी दबा कर रखी थी।

63

शहादत

मातृभूमि के हर एक कण में बसता जिनका प्यार शहादत,
उनके रक्त की बून्द होता माटी का श्रृंगार शहादत।

कब तक दीप जलेंगे उन पर कब तक हम बतियाएँगे,
अपनी ढफनी में अब तो बस याद रहे दिन चार शहादत।

रंग रोशनी त्योहारों में कितना शोर यहाँ पर है,
सिंदूर औ चूड़ियों की रंगत होती है हर बार शहादत।

घर चिराग की बाती बुझ गयी मात- पिता की आँखों से,
तिल-तिल मरने वाला जैसा देता है परिवार शहादत।

नेह भरे हाथों की ऊँगली छूट गयी जब बचपन में,
तब नन्ही आँखों में दिखती है मुझको लाचार शहादत।

कितने पैसे कितने तमगे देंगे उसकी कीमत पर,
सरकारी टेबल पर बन गयी मुद्दों का दरबार शहादत।

आग दुखों की बुझा रहे हैं बून्द-बून्द वे आँसू से,
तिनका-तिनका बिखर चूका लगता है वो घर-बार शहादत।

कर्ज चुकाया भारत माँ का फ़र्ज़ निभाकर मुक्त हुआ,
लेकिन हम पर बनी रहेगी वीरों की उधार शहादत।

64

झूठी माया

झूठ की झूठी माया देखो झूठा जाल फैलाये बैठा,
पैर नहीं होते हैं झूठ के फिर भी पैठ जमाये बैठा।

झूठ के अंधियारों में छाया झूठी सबको लगती है,
फिर भी झूठी बातें करके झूठ को सच जताये बैठा।

झूठे अपने शासन को वह कभी नहीं है झूठलाता,
हरिशचन्द्र को भी झूठलाकर यहाँ है सताये बैठां

मुँह काला भी झूठा लगता जूठे पानी में धोकर,
झूठी करतूतों के आगे रंग ऊजास लगाये बैठा।

झूठे जूठन खाकर भी वो सच की डकारें लेते हैं,
जिव्हा का हर स्वाद यहाँ पर झूठी कसमें खाये बैठा।

65

खुद्दारी

खुद से खुदा मुझे करने वाले तुझसे अब खुद्दारी क्या,
भेद नहीं कुछ दोनों में फिर क्या नफरत और यारी क्या?

लेना देना खूब किया है जीवन के व्यापार में,
प्यार का कर्ज चढ़ा नहीं जिसके ऐसा वो व्यापारी क्या?

खूब जियो इस जनम को प्यारे कर लो सारे बन्दोबस्त,
कफ़न नहीं अलमारी में फिर जीने की तैयारी क्या?

कांटे और कदम का देखो रोज नया गठबन्धन है,
ठोस चलन जब हो जाए तो फिर ठोकर की बारी क्या?

दो आकार नये सूरज को किस्मत के फेरों में तुम,
दुःख के अंधियारे जाने में फिर कोई लाचारी क्या?

66

दवा

कोई कह दे कि मोहब्बत की दवा होती है,
बिना अपराध किये खूब सजा होती है।

मेरे जीवन में हर बला से दूरी है मेरी,
संग मेरे सदा ही माँ की दुआ होती है।

मैंने हर धर्म निभाया था द्रोपदी जैसा,
यहाँ किस्मत तो मगर एक जुआ होती है।

आँख में आँसू बन के वो पिघलती है देखो,
बेटियाँ जब भी अपने घर से विदा होती है।

देह और मन का भेद कब वहाँ पे होता है,
रूह जब तृप्त हो के खुद ही खुदा होती है।

मैने हर रिश्ता निभाया है सलीके से यहाँ,
उनकी नजरों में जाने क्यों ये खता होती है।

वतन का कर्ज जरा पूछो उन दीवानों से,
उनकी हर किश्त तो सरहद पे अदा होती है।

67
विथियां

रात दिन के मेल से हैं तिथियाँ बदल गयी,
हम खड़े ही रह गये विथियाँ बदल गयी।

कागजों में लिख रहे हैं देश इक नया यहाँ,
संविधान चुप रहा नीतियाँ बदल गयी।

कैसे जान पाता हाल उनका मैं कहो भला,
डाकिया वही रहा चिट्ठियाँ बदल गयी।

जिन्दगी में मौसमों ने ली हैं ऐसी करवटें,
डालियाँ वही रही पत्तियाँ बदल गयी।

उम्र के पड़ाव में घरौंदे टूटते रहे,
अब कहाँ पे ठौर है बस्तियाँ बदल गयी।

क्यों नमक वो खा रहे हैं, मीठे दाने छोड़कर,
स्वाद अपना छोड़कर हैं चीटिंया बदल गयी।

68
तस्वीर

छप-छप कर तस्वीर छपी है,
छुप-छुप कर तकदीर रची है।

छल बल के इस कोलाहल में,
धन के नाम की धूम मची है।

उसके आने की खबरों से,
हर घर की दहलीज सजी है।

मेहनत बह गयी स्वेद में सारी,
उम्मीद की एक बूँद बची है।

धूम्र-सी उम्र रही जीवन में,
घुट-घुट कर ही इतनी कटी है।

धोखों की इस धुंधलाहट में,
आँखों से अब धूल हटी है।

69

आदमी

रहना मुश्किल हो गया है आज के इस दौर में,
आदमी अब खो गया है आज के इस दौर मे।

गुमशुदा होकर खड़ा है कब्र की बस्ती जहाँ,
अंधा होकर सो गया है आज के इस दौर में

क्यों धरा में है पड़ी अब ये दरारे चीरती,
ज़हर कोई बो गया है आज के इस दौर में।

सूखती मुस्कान की परतें लिए वो गाल को,
आँसूओं से धो गया है आज के इस दौर में।

अब भरोसे के किनारे कैसे पायेंगे यहाँ,
किश्तियाँ डूबो गया है आज के इस दौर में

70

भाव

वैर भाव की अग्नि में जब दिल के कोने तप्त हुए,
देख दूसरों के गिरने पर उग्न नयन तब तृप्त हुए।

खूब जमा कर रखे थे हमने सुख चैन के गीतों को,
हथकड़ियाँ तकदीर में बंधकर सरगम सारे जब्त हुए।

किससे वे उम्मीद करें अब झुण्ड के साथ में रहने का,
शहद जमाकर रखने वाले छत्ते सारे लुप्त हुए।

दहाड़ सुनाई कहाँ से देगी गीदड़ के उन कानों तक,
सिंहासन पर बैठने वाले सिंह भी खुद जब सुप्त हुए।

तारे भी अब गिरने लगे हैं देख जहाँ की साजिश को,
विष विषैले नाग उड़े और नभ में सारे व्याप्त हुए।

जीवन जीने की हैं अब तो गिनती मानव भूल गया,
उम्र के जितने दिन हैं बिताये वे शायद पर्याप्त हुए।

आशाओं के फूल सभी जब काँटों संग मिल जा बैठे,
भरा हुए मधुमास में अब तो सूखे पत्ते प्राप्त हुए।

71
अभिलाषाएँ

मान मिला अभिमान मिला अभिलाषाएँ सब ज़िद्दी हुई,
भटके हुए मन की धारा गन्दे नाले-सी बुद्धि हुई।

जुगनुओं ने दम्भ भरा उस चमकीले रजनीकर से,
पथ के कांटे नहीं दिखलाते काली उनकी प्रसिद्धि हुई

बन्द हुए तालों में हुनर दबे हुए सब कण्ठ हुए,
संग हुई जब मिट्टी से तलवों में जिव्हा सिद्धि हुई

कैसे बचोगी सुन लो नारी दिन के भीउजियालों में,
लज़्ज़ा आढ़न नाकाफी, दुनियाँ की नज़रें गिद्धि हुई।

नाम, मान, सम्मान की चाहत चन्द पैसों में शब्द बिके,
शारदे माँ के मंचों से कुछ कवियों की भाषा भद्दर हुई।

फूल बिछाए कांटे लेकर राहें की आसान मगर,
उन राहों में खाकर ठाकर बुद्धि में फिर वृद्धि हुई।

72
दरार

खामोशी की दरार में पीड़ा सताती रही,
मजबूरी की आँच में रोटी जलाती रही।

सबूत क्या दूं किस्मत की हेराफेरी का,
हाथ सलामत रहे लकीरें पिसाती रही।

समय का हाथ थामे चढने की कवायदें,
दिन बने मसखरे रातें चिढाती रही।

रिश्तों की नदी में वफा की नाव थी,
गहराई से उठी लहर डूबाती रही।

जिनकी निगाहों से उतरे थे दिल में,
आज वही आँखें नजर झुकाती रही।

हम खड़े रहे दुनिया की भीड़ से अलग,
गरीबी हमें व्यवस्थाएँ दिखाती रही।

73

ओ रे बादल

ओ रे बादल झरो मयकशी के लिये,
एक सागर है प्यासा नदी के लिये।

रब से ज्यादा मैं कुछ भी नहीं माँगता,
तुम मिलो मुझको बस इक सदी के लिये।

नींद आँखों की चौखट पे बैठी रही,
रात हँसती रही बेबसी के लिये।

दिल की धड़कन मेरी अब उधारी में है,
कर्ज में डूबा हूँ जिन्दगी के लिये।

भर गये प्यार के सारे खाते बही,
दिल भी गिरवी रहा इक हँसी के लिये।

74

आँगन

आँगन रस्ता देख रहा हैं रिश्तों के घर आने का,
कुछ रूपयों में सिमट के आता बूढ़े पेट के खाने का।

शिखरों को पाने की सीढ़ियाँ जिन चरणों से हैं जाती
उस पर अपना सिर झुकाने भूल गया फिर आने का।

बहु के आने से बेटा अब बहुमत में हैं वो आया,
कानों में बस शूल है चूभता उनके मुख से ताने का।

खूब पसीना था जो बहाया सावन की बंदों के लिए
आज वो बादल सूख चूके हैं किस कहें बरसाने का।

सींची थी जिस उपवन की अपने खून से हर पाती
आज है एक तरसा हुआ गुल अपनों को महकाने का।

मात-पिता के अधरों पर एक मौन हँसी आशओं की,
शायद बेटा कोशिश में है नाम मेरा कर जाने का।

75

सवाल

सवाल खुद से जवाब खुद से खुद ही खुद में सुलझ रहे हो,
मगर नजर की इन उलझनों में तुम भी शायद उलझ रहे हो।

ये मुस्कुराना मेरे लबों का तुम्हारी नजरों का यूं गिराना,
हमारी धड़कन के ये इशारे तुम भी शायद समझ रहे हो।

तुम्हारे ख्वाबों की खुश्बु में हम रातभर भीगे हैं सुनो ना,
ये तितली भंवरे बता रहे हैं तुम भी कितना महक रहे हो।

ये गुस्सा करके मुंह मोड़ लेना और दांतों में होंठों का दबाना,
निगाहों की चोरी है बता रही, तुम भी कितना मचल रहे हो।

चले गये तुम नाराज होकर और हम यहाँ पर हैं जागे-जागे
ये पायलों की छनक बता रही तुम भी करवट बदल रहे हो।

76

यादों की बस्ती

आज फिर यादों की बस्ती में मकानात हुये,
भूलकर बैठ गये जिनको वे खयालात हुये।

तुम न आये तो जमाने ने कोई बात न की,
तुम जो आये तो सवालों पे सवालात हुये।

अब तलक देखे बिना उनके नजारे रहते,
अब मुहब्बत में निगाहों के हवालात हुये।

दिन उजालों से भरे कंदील जलते फिर भी,
इससे पहले तो कभी ऐसे न हालात हुये।

लूटकर ले ही गये आखिर हमें आज यहाँ,
दुश्मनों के भी कभी ऐसे न आघात हुये।

77

रगों में गाँव

रगों में गाँव खुश्बू की रवानी छोड़ आये हैं,
कई किस्से कई बातें पुरानी छोड़ आये हैं।

यहाँ कांधों पे बंदूकें हथेली पर लिये हैं जां,
मुहब्बत में जो भीगे वो जवानी छोड़ आये हैं।

न जानें कब विदा हो लें तिरंगे में लिपटकर हम,
उसी वर्दी में मुस्काती निशानी छोड़ आये हैं।

कहें बच्चे की पापा तुम दीवाली पर चले आना,
उन्हीं आँखों में वादों का वोश पानी छोड़ आये हैं।

मिलें सरहद की मिट्टी में सभी त्यौहार औ रिश्ते,
हमारे घर के आँगन की कहानी छोड़ आये हैं।